दिखाई देना मुश्किल है। जनता भी इस विषय पर जाग्रत हुई है। इसके साथ ही धार्मिक भावनाएं आहत न हों इसके भी प्रयत्न किए जा रहे हैं। इतना सब कुछ होने के बावजूद गंगा के अस्तित्व पर संकट के बादल छाए हुए हैं। पतित पाविनी गंगा नदी के अस्तित्व को बचाने एवं प्रदूषण को समाप्त करने हेतु आम आदमी की जागरूकता एवं प्रयास अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। सरकार चाहे जो योजना बना ले जब तक आम जन-मानस की सहभागिता नहीं होगी तब तक इन योजनाओं की सफलता पर प्रश्नचिन्ह लगा रहेगा।

''सेन्ट्रल पॉल्यूशन कन्ट्रोल बोर्ड'' की वर्ष 2012 की रिपोर्ट के अनुसार सरकार अभी तक गंगा की सफाई हेतु विभिन्न परियोजनाओं हेतु लगभग 20,000 करोड़ रूपया खर्च कर चुकी है। लेकिन गंगा नदी के जल की स्थिति अत्यन्त सोचनीय है। साबरमती परियोजना, गुजरात की तर्ज पर गंगा की सफाई अभियान को चलाने की जो पहल मा. प्रधानमंत्री जी द्वारा की जा रही है, उससे एक आशा की किरण जगी है। संभव है कि मजबूत प्रतिबद्धता एवं योजनाओं के सही दिशा में क्रियान्वयन के चलते गंगा नदी अपने पूर्व वैभव एवं स्वच्छता को प्राप्त कर सकेगी

केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की रिपोर्ट के अनुसार गंगा के जल में आर्सेनिक, फ्लोराइड एवं क्रोमियम जैसे जहरीले तत्व बड़ी मात्रा में मिलने लगी हैं।

संपर्क करें :
डॉ. दीपक कोहली
5/104, विपुल खण्ड,
गोमती नगर, लखनऊ -226010
(उत्तर प्रदेश)

''जल महत्व''

''चर्चाएँ तो बहुत हो रही,- जल प्रदूषण हानि की''

नहीं हो रहा दूर प्रदूषण, बात बड़ी हैरानी की ।
चर्चाएँ तो बहुत हो रही, जल प्रदूषण हानि की ।।
ऐसा न जल स्त्रोत कहीं भी-जिसे प्रदूषण मुक्त कहे ।
अपशिष्टों से हुए-प्रदूषित, क्यों न गंदगी मुक्त कहें ।।
पावन नदियाँ हुई प्रदूषित-मल मूत्र के मिलने से ।
उद्योगों के गंदे-पानी-तत्व रसायनिक मिलने से ।।
बंद करेगा कौन ! बताओ, फिकर किसे जन हानि की।
चर्चाएँ तो बहुत हो रही, जल प्रदूषण हानि की।।
जीवन का पयभि नीर अब, तनिक न निर्मल नीर रहा ।
विष का ही पयभि-समझलो, पनपा-गंभीर रोग रहा ।।
दूषित व्यापक जल तंत्र से-बिगड़ा चहुँ ढचरा है ।
घातक तत्व रसायन जल में, मिला कहीं पे कचरा है ।।
रोक न सकते, टोक न सकते, आजादी मनमानी की ।
चर्चाएँ तो बहुत हो रही, जल प्रदूषण हानि की ।।
पंचतत्व में प्रमुख तत्व जल, निर्मलता से दूर हुआ ।
कई तरह के तत्व, रसायन, घुला-घुला भरपूर हुआ ।।
गंदी नाली नाला बन कर, मिले नदी में जाती है ।
अविरल धाराएँ नदियों की, लिए गंदगी आती हैं ।।
कानूनी बंदिश न कहीं पे-बात वहीं मनमानी की ।
चर्चाएँ तो बहुत हो रही, जल प्रदूषण हानि की ।।
जीवन का आधार जगत में, सच जल ही तो होता है ।
जिसमें ''मल'' मिल जाए-जल वो-कभी शुद्ध नहीं होता है ।।
छियालीस लाख किस्म के जल में, जल जीव-होते ही हैं ।
ऊपर से अपशिष्ट मिले तो, जल कण विष होते ही हैं ।।
जल संयंत्र संदिग्ध शुद्ध-जल-बात-नादानी की ।
चर्चाएं तो बहुत हो रही, जल प्रदूषण हानि की ।।
हृदय शुद्ध हो-जल शुद्ध हो, तब तो समझे बात बने ।
हो जल शुद्धि सतत चेतना, समझे उर में बात जमें ।।
अपशिष्ट, रसायन, अन्य वस्तु, हों न विसर्जित जल में ।
काश! बने कानून-बंदिशें, तब हो शुद्धता जल में ।।
एक नहीं अब कई भगीरथ, पीड़ा समझें पानी की ।
चर्चाएं तो बहुत हो रही, जल प्रदूषण हानि की ।।

संपर्क करें :
रामगोपाल राही
पताः- मोहल्ला गणेशपुरा वार्ड 4/5
पो॰ओ॰ - लाखेरी - 323615
जिला - बून्दी (राज.)
मो॰न॰ 09982491518
मो॰न॰ 09783459225